पिछले दिनों श्री प्रेम जनमेजय के प्रथम व्यंग्य संकलन, 'राजधानी में गंवार' पर एक विचार गोष्ठी हुई. गोष्ठी की अध्यक्षता श्री रवींद्रनाथ त्यागी ने की और संयोजक थे श्री दिविक रमेश. गोष्ठी के दौरान सर्वश्री विनय, हरीश नवल, सुधीश पचौरी, नरेंद्र कोहली, प्रेम जनमेजय, रवींद्रनाथ त्यागी, दिविक रमेश, अवध नारायण मुद्गल और शेरजंग गर्ग. (बायें से दायें)

● विवरण : हरीश नवल

धर्मयुग 18 मार्च, 197

राजधानी में गंवार

प्रेम जनमेजय

ट्रेन प्लेटफार्म पर आकर रुकी तो लगा कि जैसे किसी ने कूड़ा बिखेर दिया हो। सारी भीड़ उस पर मक्खियों की तरह बैठने का प्रयत्न कर रही थी। ट्रेन के डिब्बे अन्दर से भीड़ को उगल रहे थे जैसे कै कर रहे हो। निकलने वाली भीड़ के चहरे पर घुटन थी, रेल-विभाग के प्रति गालियों की सौगात थी।

आत्मा ने बड़ी कठिनाई से अपना सामान और अपने-आपको बाहर निकाला। खड़े होकर उसने एक विश्रामसूचक लम्बी सांस और नथुनों को फैलाकर फिर उसे छोड़ दिया, जैसे इंजिन भाप छोड़ता है। चारों और चीखती-चिल्लाती भीड़ को देखकर उसे लगा कि परिवार-नियोजन वास्तव में एक समस्या है।

"साहब ! सामान उठेगा !" कुली ने आत्मा की आँखों में प्यार से अपनी आँखें डालीं जैसे वह उसकी प्रेमिका को। आत्मा ने आँखें मिचमिचाईं और उसे घूरते हुए बोला, "सामान बाहर ही ले चलोगे, कहीं भाग तो नहीं जाओगे ?"

"साले ! हमें बेईमान कहता है !" कुली ने लगभग चीखती आवाज़ में कहा जिससे डरकर आत्मा के गालों पर दो आँसू रेंग गए। उसने रुंध गले से कहा, "ले चलो।"

पैसे पूछने का आत्मा को साहस नहीं हो रहा था। कुली की चाख का डर अब भी उसके ह्दय में दही की तरह जमा हुआ था। वह कुली के साथ गेट की ओर बढ़ा। गेट पर टिकट-चैकर स्वागतम् की मुद्रा में खड़ा हुआ था। उसने आत्मा को शिकारवाली नजरों से घूरा। आत्मा घबरा गया। टिकट-चैकर की आँखों में ब्रह्म-ज्योति जल उठी।

"टिकट निकालो !" उसने घरघराती आवाज़ में आदेश दिया और फिर स्वयं ही उसकी जेबें टटोलने लगा। "टिकट नहीं है तो चाय-पानी के लिए बीस रुपये निकालो।"

"नहीं, टिकट है।" आत्मा ने हकलाते हुए कहा और फिर उसने कमीज के अन्दर से मैली-कुचैली टिकट निकालकर उसे पकड़ा दी।

टिकट-चैकर को लगा जैसे किसी ने उसकी जेब काट ली हो। उसने आत्मा को गाली देते हुए कहा, "बड़े देशभक्त बनते हैं।" इसके साथ ही वह काफी उदास हो गया। उसे उदास देखकर आत्मा की हिचकी बँध गयी। आत्मा को लगा कि वह वास्तव में बेवकूफ है। आधे पैसे आराम से बचाए जा सकते थे। उसने सोच लिया कि अब वह आगे से कभी भी देशभक्त नहीं बनेगा।

"साला ! बड़ा खाऊ है।" गेट से बाहर निकलते ही कुली ने यह वाक्य निकाला और उसके साथ ही गले में अटकी हुई बलगम को थूक दिया।

आत्मा आश्चर्यचकित नगर की सभ्यता का पहला पाठ पढ़ रहा था। प्लेटफार्म पर लोग शरणार्थियों की तरह सोए हुए थे। बाहर निकलकर कुली ने सामान को ज़मीन पर पटका और हाथ फैलाकर खड़ा हो गया जैसे दान माँग रहा हो।

"कितन पैसे ?" आत्मा ने गंभीर स्वर में कहा।

"डेढ़ रुपया।" कुली ने अपनी श्रम-नीति की घोषणा की।

आत्मा की सिकुड़ी आँखें एकाएक फैल गयीं। उसको लगा जैसे कोई उसका गला घोंट रहा है। पैसेवाली जेब पर कसकर हाथ रखते हुए बोला-

"तुम मुझे लूट रहे हो, मैं तुम्हें इस तरह नहीं लूटने दूँगा। आठ आने से एक पैसा अधिक नहीं दूँगा।"

"तेरा बाप भी देगा!" कुली ने गिरेबान पकड़ लिया। आत्मा ने गिरेबान छुड़ाने के लिए हाथ को पकड़ा तो कुली ने अपना दूसरा हाथ उसकी जेब में डाल दिया। आत्मा निढाल हो गया। कुली ने जेब में से एक-एक के दो खरे नोट निकाले और अपनी जेब में रख लिये।

"आठ आने तो लौटा दो।" आत्मा रो पड़ा।

"आठ आने का तुमने मेरा समय नष्ट किया है। मैं एक पाई भी तुमको नहीं लौटाऊँगा।" और कुली उसको निःसहाय छोड़कर चला गया।

उसे इस तरह भकुवेपन में देखकर एक स्कूटरवाले की आँखें दुगुनी हो गयी। उसने बढ़कर आत्मा का जैसे स्वागत किया और बड़े मीठे लहजे में बोला, "कहाँ जाना है, मेरी सरकार ?'

आत्मा को लगा कि स्कूटरवाला काफी शरीफ है और उसकी मदद अवश्य करेगा। वह उसके गले से लिपट गया और उसको कसकर भींचते हुए तोतली भाषा में बोला, "रामकृष्णपुरम् कहाँ है ?"

स्कूटरवाला समझ गया कि बाऊ परदेसी है। उसकी आँखों में चमक पैदा हो गयी जैसे उसकी लाटरी खुल गयी हो। उसने पुचकारते हुए स्वर में कहा, "दिल्ली के दूसरे कोने में। परन्तु आप घबराएँ मत, मैं आपको अपने इस स्कूटर पर बिठाकर ले जाऊँगा। आप लोगों की सेवा के लिए ही तो यह स्कूटर है।"

आत्मा की आँखों में प्रसन्नता की बाढ़ आ गयी। उसने मन-ही-मन उसकी प्रशंसा की। परेदस में कौन इतनी मदद करता है! अपने स्कूटर में ले जा रहा है। अपने गाँव का ही कोई होगा।

"क्या आपका सामान यहीं है ?"

"सामान मैं अपने-आप उठा लेता हूँ।" आत्मा ने उसकी सहायता करनी चाही

"अरे, हम तो आपके नौकर हैं। पैसे लेंगे तो काम भी करेंगे।" ड्राइवर ने मक्खन लगाते हुए कहा।

"तुम पैसे भी लोगे ?" आत्मा को लगा कि उसका दिल स्कूटर के पहिये के नीचे दब गया है।

"और नहीं तो क्या स्कूटर तुम्हारे बाप ने खरीदकर दिया है ?" छब्बीस मील दूर क्या तुम्हें मैं पानी डालकर ले जाऊँगा ?" ड्राइवर ने बाप की तरह डाँटते हुए कहा।

"छब्बीस मील दूर ? कितने पैसे होंगे ?" आत्मा की आँखें प्रश्नवाचक चिह्न की तरह फैल गयीं।

"यह तो मीटर बताएगा।" ड्राइवर ने मीटर की ओर इशारा किया।

आत्मा ने उसे घूरकर देखा, जैसे किसी अजूबे को देख रहा हो। आश्चर्य-भरी आवाज़ में उसने पूछा, "यह कैसे बताएगा ?"

"इसमें एक आदमी बैठा हुआ है, वह बताएगा।" ड्राइवर ने स्कूल मास्टर की तरह डाँटा, "पता नहीं किस गाँव से आए हो कि तुम्हें मीटर का भी पता नहीं है।"

"बादलपुर से आया हूँ दिल्ली देखने अपने बेटे के पास।" आत्मा ने मासूम होकर कहा।

"चुप भी कर बे, मेरा टाइम वेस्ट हो रहा है।" ड्राइवर ने अपनी थोड़ी अंग्रेजी का रोब आत्मा पर झाड़ा।

और वह सामान रखने लगा। आत्मा को लगा कि वह क्लास में मुर्गा बना हुआ है। वह खम्भे की तरह निश्चल एक जगह खड़ा रहा। ड्राइवर सामान रखने में मस्त था।

"फिर भी कितने पैसे लगेंगे, बता दो ?" एकाएक आत्मा को कुली वाला किस्सा याद हो आया।

ड्राइवर ने एक बार तीखी नज़रों से उसको घूरा जैसे प्रेमिका का प्रेमी अपने विरोधी को घूरता है। फिर वह दबाव भरे शब्दों में बोला, "कम से कम बीस रुपये लग जाएंगे।"

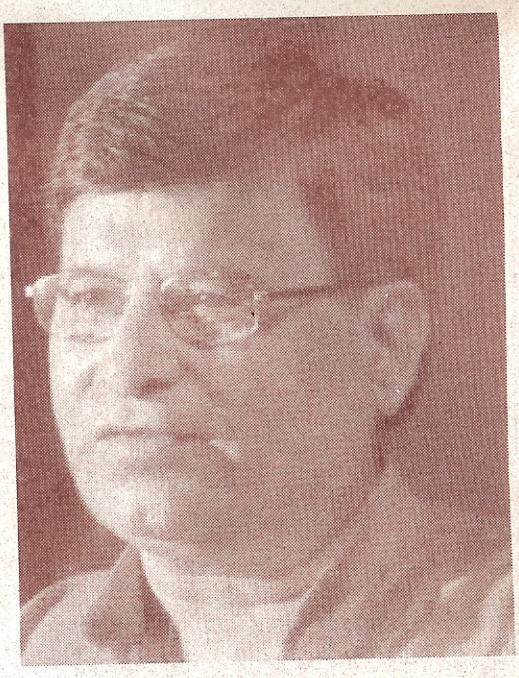

आत्मा को लगा जैसे उसके सारे पैसे जेब में से निकालकर सड़क पर फैल गए हैं। उसने अपने-आपको संभालने का प्रयत्न किया। उसके माथे पर पसीने की बूँदे चमक उठी जैसे भाप की बूँद बर्तन पर चमकती है। उसने सूखी आवाज़ में कहा, "बीस रुपये...? मैं नहीं दे सकता, मेरा सामान उतार दो। मैं किसी बैलगाड़ी या ताँगे में चला जाऊँगा। मुझे छोड़ दो।" आत्मा छटपटाने लगा।

"तुमने मेरा समय नष्ट किया है, मैं तुम्हें जबर्दस्ती ले जाऊँगा।" और ड्राइवर ने उसे स्कूटर में ढकेल दिया। आत्मा को लगा जैसे वह एक बहुत बड़े खड्डे में जा गिरा हो। वह मासूम होकर आँसू बहाता चुपचाप बैठ गया। उसने जेब को कसकर पकड़ा हुआ था परन्तु फिर भी उसे लग रहा था कि कोई उसका सब कुछ निकाल रहा है।

स्कूटर पुरानी दिल्ली की सड़कों से रेंगकर नयी दिल्ली की सड़कों पर फिसल गया। आत्मा पहले कुछ क्षण तो स्कूटर में उसी तरह उदासीन मुँह लटकाए बैठा रहा परन्तु बाहर की चकाचौंध ने उसकी अवस्था बदल दी। रात का कालापन अभी इतना अधिक नहीं फैला था परन्तु फिर भी दुकानों के सिरों पर विज्ञापन चमक रहे थे।

आत्मा ने घड़ी को घूरा जैसे अपना सारा गुस्सा उस पर उतारना चाहता हो। उसने एक बार 'रिव्यू-मिरर' में ड्राइवर का चेहरा देखा और फिर घड़ी को अपनी जेब में रख लिया। उसे डर हो आया कि कहीं ड्राइवर उससे घड़ी न छीन ले। उसने जेब को और कसकर पकड़ लिया जैसे उसमें पड़ा सब कुछ स्कूटर के धचकों के कारण निकलकर स्कूटर के पहिये के नीचे आत्महत्या कर लेगा।

आत्मा बाहर की ओर घूर रहा था। शहर की चकाचौंध देखकर उसके हृदय में वसंत की बाहर आ गयी। आत्मा को लगा कि उसके अन्दर खूब हरी-भरी घास उग आयी हैं।

'इतना किराया तो रेल से आने में नहीं लगा है जितना इस स्कूटरवाले ने ऐंठ लिया है।' यह सोचते ही आत्मा का रक्त उबल पड़ा जैसे चाय का पानी उबलता है। परन्तु आत्मा अनचाहे ही उसे शान्त कर गया। ड्राइवर उसे सामाने काफी भारी था।

आत्मा ने सोचा कि वह ड्राइवर से अपने बेटे के घर पहुँचने पर निबट लेगा। वह अपने बेटे से कहकर इस स्कूटर वाले को पुलिस में पकड़ा देगा। वह ड्राइवर को चौदह आने से एक पैसा अधिक नहीं देगा। आत्मा ने अपनी जेब की पकड़ और मजबूत कर दी। अनजान लोगों को तंग करते हैं, मजा चखाऊँगा- आत्मा गालियों में लड़ते हुए बच्चे की तरह सोच रहा था। उसका बेटा जैसे उसका बेटा नहीं, बाप था जिससे वह शिकायत करता। आत्मा ने इस उत्साह में होंठ काट लिया और निकले खून को इस तरह चूस लिया मानो वह ड्राइवर का खून हो।

आत्मा ने चुपके से जेब से घड़ी निकाली और उसमें समय देखा- सवा आठ। मतलब कि डेढ़ घण्टा हो गया उसे रेल से उतरे पर अभी तक वह घर नहीं पहुँच पाया है। समय देखकर आत्मा ने घड़ी बड़ी चालाकी से जेब में रख ली और झटके के साथ ड्राइवर की ओर देखा। ड्राइवर की अवस्था देखकर उसे विश्वास हो गया कि उसने उसे नहीं देखा था। उसने एक लम्बी-सी साँस ली और छोड़ दी मानो उसके घर लड़की पैदा होते-होते लड़का हो गया हो।

स्कूटर के झटके के साथ ड्राइवर को झटका लगा और उसकी पकड़ हैंडिल पर मजबूत हो गयी। उसे लगा कि हैंडिल उसके हाथ से निकल जाएगा। वह सवारी को उसके घर नहीं ले जाएगा। अगर ले गया तो वहाँ रहने वाले उसकी चालाकी समझ जाएंगे। वे तो दिल्ली के पुराने पानी होंगे। यह सवारी को कॉलोनी के पास उतार देगा।

आत्मा को स्कूटर में बैठे काफी प्रसन्नता हो रही थी परन्तु ड्राइवर का भय उसको समेटे हुए था। उसको लग रहा था जैसे किसी ने हँसी के गोलगप्पे खिलाकर उसके पेट पर नुकीला चाकू रख दिया है। जरा-सी भी हँसने पर चाकू दबाव डालने लगता है। आत्मा ने अपने पेट पर हाथ फेरा, लगा जैसे वास्तव में ही चाकू उसके पेट पर चुभ रहा है। उसे अपनी इस अवस्था पर काफी क्रोध आया। उसे लगा कि वह शिखण्डी हो गया है।

एकाएक आत्मा ने बाहर देखा, काफी अन्धेरा था। वह कुछ घबरा-सा गया। उसे लगा कि वह ड्राइवर उसे लूटने की तैयारी कर रहा है। आत्मा का हृदय पिचक गया और उसमें से चिपचिपी तरह वस्तु बहने लगी। आत्मा ने उसे तरल वस्तु को बड़े प्रेम से अपने शरीर पर मल लिया और उसको लगा कि वह अब 'युद्धवीर' हो गया है। उसने ड्राइवर से पूछा, "अभी कितनी देर है ?" आवाज़ कड़क थी।

ड्राइवर को आत्मा की आवाज़ पर आश्चर्य हुआ। उसने आत्मा को पलटकर घूरा। आत्मा की वीरता पराजित हो गयी। ड्राइवर फिर वैसा ही प्रसन्न हो गया। उसने शब्दों को चबाते हुए कहा, "बस, अधिक देर नहीं।" जैसे बच्चे को पुचकार रहा हो।

ड्राइवर ने एक झटके से स्कूटर रोक दिया। आत्मा यकायक उछल गया। उसको लगा जैसे वह अन्तरिक्ष यान में झटका खा गया है। गले में फँसी आवाज में आत्मा ने पूछा, "क्यों, क्या हुआ ?"

"तुम्हारा जन्मस्थान आ गया।"

"अं...!"

"अरे, उतर भी, मैंने अभी और भी सवारियाँ पटानी हैं। देख! कितने ठाठ से बैठा है जैसे स्कूटर इसके बाप का हो। पैसे सुनकर तो साले के होश उड़ गये थे।" ड्राइवर ने आत्मा का हाथ पकड़कर उसे एक झटके से बाहर निकाल दिया।

"पर यहाँ तो कहीं मकान नज़र नहीं आ रहे हैं ?" आत्मा की मच्छर जैसी टाँगे काँप गयीं।

"और क्या श्मशान नजर आ रहा है ? वह सामने क्या है ?" ड्रायवर ने आत्मा को तमाचा जड़ दिया।

"इतनी दूर...क्या मुझे घर तक नहीं पहुँचाओगे ? आत्मा ने रोते हुए कहा।

"तुम्हारे बाप का ठेका ले रखा है क्या ? जल्दी से पैसे निकालो, मुझे देर हो रही है।"

आत्मा की आँखों से दो बूँद पानी टपककर होंठों में घुस गया जिसे आत्मा चाट गया, खारा लगने पर वह उसे निगल गया। ड्राइवर उसकी इस दिशा पर करुण-गीत हो गया। उसकी आँखों से मेघ बरस पड़ा, परन्तु वह अपनी

आदत से मजबूर था। उसने आत्मा के सिर पर हाथ फैरते हुए पुचकारकर कहा, "चलो, एक रुपया कम ले लेता हूँ, तुम उन्नीस दे दो।" ड्राइवर आत्मा के गले से लिपट गया। उसने गले से लिपटे-लिपटे ही आत्मा की जेब में से रुपये निकाल लिये। उनमें से उन्नीस रुपये रखकर शेष आत्मा को लौटा दिये। (स्कूटर-ड्रायवर की शराफत)

"देखो, मुझ पर रहम खाओ। मेरे रुपये लौटा दो। मैं अपनी पोती के जन्मदिन पर जा रहा हूँ, मेरे पास कुछ नहीं बचेगा। तुम केवल पाँच रुपये ले लो।" और आत्मा उसके कदमों में अदब के साथ झुक गया।

ड्राइवर का हृदय पिघलने लगा परन्तु उसने ठोककर उसे कठोर बना लिया। उसने आत्मा के हाथों से अपना पैर झटकते हुए कहा, "मैं ड्राइवर हूँ, कोई घसियारा नहीं हूँ। मैं और कोई रियायत नहीं कर सकता हूँ।" ड्राइवर बाँस की तरह अकड़कर खड़ा हो गया।

इतनी देर में वहाँ एक पुलिसवाला आ पहुँचा। उसने यह घटना देखी तो उसका दिमाग हवा में उड़ने लगा। उसे लगा कि आज वह काफी अमीर हो सकता है।

पुलिसवाले को देकर आत्मा के हृदय में एक नया उत्साह उगा। वह अपने कपड़े झाड़ता हुआ पुलिसवाले के कदमों में पतिव्रता स्त्री की तरह लिपट गया। पुलिसवाले ने आत्मा को आशीर्वाद दिया। आत्मा ने पुलिसवाले ने अभयदान पाकर अपनी करुण-कथा सुनानी आरंभ कर दी। कथा सुनकर पुलिसवाले ने ड्राइवर के चेहरे की ओर मिचमिचाई नज़रों से घूरा। ड्राइवर ने दबाकर आँख मार दी। पुलिसवाले का चबड़ा कुत्ते की तरह चोड़ा हो गया। उसने अपनी जेब को बड़े प्यार से सहलाया। स्कूटरवाला उसको अकेले में ले गया और एक पाँचा का नोट उसकी ओर बढ़ा दिया।

पुलिसवाले की फैली आँखे सिकुड़ गईं और उसने आँख में से कीच निकालकर ड्राइवर के मुँह में ठूँसते हुए कहा, "बस !"

"काफी मोटी आसामी है, बाकी इससे ऐंट लेना।" ड्राइवर ने कीच का स्वाद लेते हुए कहा। दोनों ने आर्थिक संधि पर हस्ताक्षर किए।

ड्रायवर के चेहरे पर फुलफुलापन देखकर आत्मा का दिल अन्दर को धँस गया। पुलिसवाला आत्मा की ओर बढ़ा और उसने कहा, "इसने ठीक पैसे लिये हैं। घर मैं तुम्हें पहुँचा दूँगा।" पुलिसवाले ने स्वर में शासकीय रोब था।

आत्मा को कुछ संतोष हुआ। कम से कम वह घर तो पहुंच आएगा। उसने सामान की ओर देखते हुए चायना-भरे स्वर में कहा, "कोई मजदूर नहीं मिलेगा ?"

सामान की ओर देखकर पुलिसवाले की आँखें फैल गयी। उसने अपने मन में एक योजना बनायी और कहा, "क्यों नहीं मिलेगा ? मैं अभी पकड़कर लाता हूँ!"

"पैसे कितने लगेंगे ?" आत्मा को दोनों किस्से याद थे।

"तुम चिन्ता मत करो, साले को एक पैसा नहीं दूँगा!" पुलिसवाले ने अपनी 'पर्सनेलिटी' बताई।

रात तीन घण्टे व्यतीत कर चुकी थी। सड़क पर अब भी काफी भीड़ थी। सबकी आँखों में आत्मा के प्रति सहानुभूति थी।

कुछ देर में पुलिसवाला एक मजदूर को पकड़ लाया। उसके चेहरे पर जगह-जगह कटाव था, जैसे भारत का नक्शा। उसकी आँखों में एक विशेष चमक थी। उसने बिना कुछ कहे सामान उठा लिया। कुछ दूर चलकर उनको एक बहुत बड़ी भीड़ मिली। पुलिसवाले की आँखों में चाँद चमक गया। उसने मजदूर को हलकी-सी चोट की और मजदूर सामान के साथ भीड़ में गोल हो गया। आत्मा का ध्यान कहीं और देखकर पुलिसवाला भी भीड़ में घुस गया। कुछ कदम चलने के बाद आत्मा ने जैसे ही दाएँ देखा, पुलिसवाला गायब था। पीछे मुड़कर देखा, मजदूर सामान-सहित गायब था। आत्मा को पुलिसवाले की मुसकराहट का रहस्य समझ आ गया।

आत्मा को लगा कि किसी ने उसके सिर पर दस-बारह हथौड़े मार दिए हैं। वह चकरारकर गिर गया जैसे कोई खोखला पेड़ गिरता है। आसपास की भीड़ ने बड़ी सोच-समझ के बाद आत्मा को उठाया क्योंकि यह पुलिस का मामला था। कुछ पानी छिड़का और होश में लाया गया। आत्मा होश में आते ही रो पड़ा। उसकी आँखों से परनाले की तरह आँसू बह रहे थे। सारी भीड़ की हिचकियाँ